Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.889, Volume 12, No. 03, July-September 2022, pp. 96-100

श्रीमदभगवदगीता में वर्णित मनोवैज्ञानिक अवधारणा का शैक्षिक विश्लेषण

दिनेश कुमार लाटा*
डॉ. सुश्री मनोजलता सिंह**

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन को परम्परा के आधार पर आस्तिक एवं नास्तिक दों भागों में बॉटा जाता है। आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत वे दर्शन आते है जो वेदों में विश्वास करते हैं तथा नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत वेदों में विश्वास न करने वाले दर्शन आते है। आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत सांख्य, योग, न्याय, वैशेशिक, पूर्व एवं उत्तर मीमांसा ये शडदर्शन आते है। गीता आस्तिक दर्शनों की कोटि में आता है।

श्रीमदभगवदगीता में सन्निहित शिक्षा के उद्देश्य वर्तमान समय के शैक्षिक उद्देश्य से यद्यपि भिन्न है, किन्तु आज के जनतंत्रीय युग में जिस शैक्षिक उद्देश्य की आवश्यकता महसूस की जा रही है, उसके सर्वथा अनुकूल हैं। वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य बालक की व्यावसायिक कुशलता के विकास को आधार बनाकर उसका सामाजिक, नैतिक,चारित्रिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं मानसिक विकास करना है। श्रीमदभगवदगीता में सन्निहित शिक्षा आत्मबोध की भावना का विकास करने की आवश्यकता बताती है। वर्तमान समय में आदर्श, सदगुणी एवं मूल्यों से युक्त एक पूर्ण मानव का निर्माण करने की जो आवश्यकता महसूस की जा रही है, उसकी पूर्ति गीता भी करना चाहती है। इस संदर्भ में शिक्षा के साथ साथ मनोविज्ञान का महत्व भी व्यक्ति के चरित्र निर्माण हेतु बढ. जाता है।

समस्या का औचित्य

श्रीमदभगवदगीता जनमानस में एक अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ है जो साक्षात भगवान श्रीकृष्ण की दिव्य वाणी है। इसमें धर्म, विज्ञान, योग–विज्ञान, शिक्षा–दर्शन, मनोविज्ञान तथा आध्यात्म शास्त्र छिपे हुए है। उपासना, कर्म एवं विज्ञान के समन्वित रूप का वर्णन जिस प्रकार इस ग्रन्थ रत्न में हुआ है, वैसा अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। यह धर्म, दर्शन एवं मनोविज्ञान के समायोजन एवं समन्वय का एक विलक्षण ग्रन्थ हैं।

भगवदगीता में श्रीकृष्ण स्वयं शिक्षक के रूप में अर्जुन रूपी शिष्य को क्रांतिकारी शिक्षा देते है। श्रीकृष्ण केवल अर्जुन को ही ज्ञान नहीं देते, वरन् समस्त मानव जाति को ज्ञान देते है। उन्होने युद्ध द्वारा न केवल कौरव रूपी शत्रुओं को मारने अथवा योगबल द्वारा इन्द्रियों एवं भोगों को जीतने के लिये अथवा आध्यात्म बल द्वारा काम, क्रोध, लोभ इत्यादि विकारों को परास्त करने हेतु गीता के उपदेश के रूप में अनमोल ज्ञान दिया ।

* शोधार्थी, श्री जे जे टी विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, चूरेला, झुंझुनू, राजस्थान।
** शोध निदेशक, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, चूड़ेला, झुंझुनू, राजस्थान।

श्रीमदभगवदगीता में मनोविज्ञान का परिपाक् है। शिक्षा एवं दर्शन की मनोवैज्ञानिक प्रस्तुती श्रीमदभगवदगीता की विशिष्टता है। इस ग्रन्थ में प्रथम श्लोक से लेकर अन्तिम श्लोक तक मनोवैज्ञानिकता स्पष्ट है। भगवदगीता में निहित विभिन्न मनोवैज्ञानिक तत्वों का अध्ययन इस ग्रन्थ में उल्लेखित तत्व विषयक विचारों को समाज के लिये सरल एवं सम बनाने में सहायक होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

- श्रीमदभगवदगीता में निहित विभिन्न मनोवैज्ञानिक दशाओं का अध्ययन करना।
- श्रीमदभगवदगीता में बुद्धि की संकल्पना का अध्ययन करना।
- श्रीमदभगवदगीता में व्यक्तित्व की संकल्पना का अध्ययन करना ।
- श्रीमदभगवदगीता में निहित दुश्चिंता संबंधी तथ्यों का अध्ययन करना ।
- श्रीमदभगवदगीता में निहित समायोजन के स्वरूप व उसकी विधियों का अध्ययन करना ।
- श्रीमदभगवदगीता में अभिप्रेरणा की संकल्पना का अध्ययन करना ।

शोध विधि

शोधकर्ता द्वारा अपने सम्बन्धित अध्ययन हेतु दार्शनिक अनुसंधान विधि को स्वीकार किया गया है। किसी दार्शनिक समस्या का व्यवस्थित रूप में किया गया अध्ययन ही दार्शनिक शोध कहलाता है।

प्रस्तावित शोध कार्य में श्रीमदभगवदगीता में वर्णित मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का शैक्षिक विश्लेषण किया जाता है। इस हेतू विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन के लिये वांछित सूचनाएँ प्राप्त करने के लिये प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत श्रीमदभगवदगीता में मूल पाठ को आधार बनाकर इसमें निहित मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं एवं स्त्रोत एवं गौण स्त्रोत के अन्तर्गत श्रीमदभगवदगीता पर लिखी गई विभिन्न टीकाओं, पुस्तकों, प्रकाशित लेख, शोधकार्यों एवं विभिन्न व्याख्यानों का अध्ययन स्वीकार किया गया है।

शोध कार्य के निष्कर्ष

- गीता शिक्षक एवं शिक्षार्थी के लिये आवश्यक पात्रताओं का निर्धारण करती है।

गीता बताती है कि शिक्षक एवं शिक्षार्थी में श्रद्धा, उत्सुकता तथा तन्मयता समान रूप से होनी चाहिए, मनोविज्ञान भी इस तथ्य पर जोर देकर कहता है कि अध्यापक में विषय का ज्ञान, शिक्षण की कुशलता, दया, सहयोग, सहानुभूति का होना आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर विद्यार्थी में जितनी अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति होगी अधिगम में उसे उतना ही कम समय लगेगा।

- गीता मनोविज्ञान के इस सिद्धान्त की पुष्टि करती है कि बालक की मूल प्रवृत्तियॉ उसके किसी विशिष्ट व्यवहार को उत्पन्न करती है।

गीता मे मनोस्नायु विकृति का अध्ययन दिखाई देता है, इस मानसिक विकृति के लक्षण अर्जुन के व्यवहार में दिखाई देते है तथा श्रीकृष्ण इस विकृति का अध्ययन कर उसका समाधान प्रस्तुत करते है तथा अर्जुन में आत्मविश्वास जाग्रत करते है, मनोविज्ञान का भी मानना है कि बालक की मूल प्रवृतियॉ उसके किसी विशिष्ट व्यवहार को उत्पन्न करती है, अतः शिक्षक बालक के किसी विशिष्ट व्यवहार के कारणों को समझकर उनमें वांछित परिवर्तन या सुधार कर सकता है।

- गीता में विद्यार्थी की पात्रता संबंधी तथ्य अधिगम सिद्धान्त के तत्परता के नियम की पुष्टि करते है।

गीता इस बात पर जोर देती है कि सुपात्र को ही शिक्षा दी जानी चाहिए। इस प्रकार गीता विद्यार्थी की पात्रता का भी अध्ययन करती है यहॉ गीता थोर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त के मानसिक तत्परता के नियम अतिनिकट है जिसके अनुसार यदि बालक सीखने के लिये तत्पर है तो उसे अवधान केन्द्रीकरण में सहायता मिलेगी और वह सरलता से अधिगम कर लेगा, गीता की दृष्टि में ऐसा विद्यार्थी ही सुपात्र है।

- मनोविज्ञान मे समायोजित व्यक्तित्व के लक्षण भगवदगीता में स्थिर बुद्धि पुरूष के लक्षणों के अन्तर्गत ही आते है।

गीता के अनुसार स्थित प्रज्ञ (स्थिर बुद्धि) अपने वातावरण में समायोजित होकर निष्काम एवं समत्व भाव से कर्म करता है, मनोविज्ञान भी हमें यही बताता है कि बुद्धि ऐसी योग्यता है जो हमें वातावरण के साथ समायोजन करना सिखाती है। अतः समायोजन क्षमता के विकास हेतु बुद्धि को स्थिर किया जाना आवश्यक है।

- गीता के अनुसार संवेगों का असंतुलन या अनियंत्रण व्यक्तित्व विकास को अवरूद्ध कर देता है।

गीता क्रोध, सुख, दुख, ईर्ष्या, इच्छा आदि को इस शरीर के कार्यक्षेत्र के विकार कहती है जो मनुष्य की आत्मसिद्धि के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते है, मनोविज्ञान इन विकारों को ही संवेग कहता है जिनका असंतुलन मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास को अवरूद्ध कर देता है।

- गीता में ईर्ष्या तथा क्रोध जैसे संवेगों से मुक्ति की बात कही गई हैं।

गीता में कहा गया है कि ईर्ष्या जैसे संवेग के कारण व्यक्ति सकाम कर्मो से बंध जाता है जिससे उसका अवधान केन्द्रित नहीं हो पाता और वांछित फल प्राप्त न होने पर उसमें क्रोध हो जाता है, मनोविज्ञान भी ईर्ष्या को नियंत्रित करने के लिये कहता है क्योंकि ईर्ष्या से बालक में विध्वसात्मक प्रवृत्ति विकसित हो जाती है।

- मनोविज्ञान में संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्तित्व की संकल्पना गीता के आत्म साक्षात्कारी व्यक्तित्व की संकल्पना के अतिनिकट है।

गीता में कहा गया है कि आत्म साक्षात्कार की अवस्था तक पहुॅचने के लिये स्थिर बुद्धि हेतु संवेगात्मक संतुलन आवश्यक है जिसे मनोविज्ञान संवेगात्मक परिपक्वता कहता है, संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति के व्यवहार में संगती(ब्वदेपेजमदबलद्ध होती है तथा उसके जीवन में समन्वय एवं सामंजस्य की स्थिति होती है और यही स्थिति गीता में वर्णित समता के भाव को दर्शाती है।

- अर्जुन द्वारा युद्ध का विचार त्यागने की स्थिति मनोविज्ञान में बताई गई असमायोजन की ही अवस्था है।

अर्जुन युद्ध का विचार त्याग कर रथ के पिछले भाग मे बैठ जाता है क्योंकि वह अपने कुटूंम्बजनों से युद्ध करने की परिस्थिति के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है, मनोविज्ञान व्यक्ति की ऐसी असामंजस्यपूर्ण स्थिति को असमायोजन कहता है।

- भगवदगीता समाजयोजन हेतु शिक्षा प्रदान करती है।

श्रीकृष्ण अर्जुन को युद्ध की परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की शिक्षा देकर उसे अपना कर्म (क्षत्रिय कर्म) करने के लिये प्रेरित करते है, इसी प्रकार मनोविज्ञान भी कहता है कि शिक्षक विद्यार्थी को अपने भौतिक तथा सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य अथवा समायोजन स्थापित करना सिखाए क्योंकि समायोजन ही शिक्षा है।

- भगवदगीता में अभिप्रेरणा की संकल्पना निहित है।

मनोविज्ञान के अनुसार अभिप्रेरणा वह मानसिक दशा है जो व्यक्ति की निष्क्रियता को समाप्त कर उसे अपने उद्देश्य प्राप्ति की ओर अग्रसर करती है, श्रीकृष्ण कर्मच्युत हो चुके अर्जुन को गीतोपदेश के माध्यम से युद्ध करने के लिये सक्रिय बना देते है हो अभिप्रेरणा का एक उदान्त उदाहरण है।

- गीता के अनुसार विद्यार्थी की प्रशंसा उसके अधिगम हेतु अभिप्रेरणा का एक शक्तिशाली माध्यम है।

श्रीकृष्ण अर्जुन को परंतप (शत्रुओं का ताप पहुॅचाने वाला) ए पार्थ वीर माता कुन्ती का पुत्र– कुन्ती का दूसरा नाम पृथा था द्धए भारत वीर धीर गम्भीर राजर्षि भरत के कुल में जन्म लेने वाला) ए सव्यसाचिन(निपुण धनुर्धर) जैसे नामों से सम्बोधित करके उसे अपने भीतर छिपी वीरता को पुनः प्राप्त करने के लिये अभिप्रेरित

करते है। यहाँ श्रीकृष्ण अर्जुन को उसकी वीरता की प्रशंसा के माध्यम से अभिप्रेरणा प्रदान करते है। इस संदर्भ में मनोविज्ञान भी कहता है कि प्रशंसा एक शक्तिशाली अभिप्रेरक है जो पुरस्कार का ही रूप है, चुँकि प्रत्येक विद्यार्थी प्रशंसा पाने का इच्छुक होता है, अतः प्रशंसा से उसे अधिगम हेतु अभिप्रेरित किया जा सकता ळें

- गीता में निदानात्मक – उपचारात्मक शिक्षण का सिद्धान्त निहित है।

श्रीकृष्ण अर्जुन की मनोस्थिति का अध्ययन कर उसकी दुश्चिंता तथा मनोस्नायु विकृति का निदान करके उसके सफल उपचार हेतु उसे गीता का उपदेश देते है, मनोविज्ञान में भी वर्तमान समय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में यही निदानात्मक–उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था देखने को मिलती है जिसमें सर्वप्रथम शिक्षक निरीक्षण के आधार पर विद्यार्थी की त्रुटियों एवं कमजोरियॉ का निदान करता है तत्पश्चात अपनी सूझबूझ के आधार पर उनको दूर करने के लिये उपचारात्मक शिक्षण भी प्रदान करता है।

- अर्जुन द्वारा गीता के ज्ञान की प्राप्ति की आवश्यकता के सदंर्भ में अधिगम के प्रबलन सिद्धान्त (Reinforcement theory) की पुष्टि होती है।

अर्जुन कुरूक्षेत्र में संशयग्रस्त है कि उसे युद्ध करना चाहिए अथवा नहीं, वह इस संशय से मुक्त होने की आवश्यकता महसूस करता है जिसकी पूर्ति हेतु वह श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीता का ज्ञान प्राप्त करता है, यहाँ अर्जुन द्वारा संशय से मुक्ति हेतु गीता के ज्ञान की प्राप्ति की आवश्यकता हल के प्रबलन सिद्धान्त की पुष्टि करती है जिसके अनुसार अधिगम आवश्यकता की पुर्ति की प्रक्रिया के द्वारा होता है।

- गीता में यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि बुद्धिलब्धि (Intelligence - Quotient) से संवेगात्मक लब्धि (Emotional - Quotient) तथा संवेगात्मक लब्धि से आध्यात्मिक लब्धि (Spiritual-Quotient) का विकास होता है।

जब श्रीकृष्ण अर्जुन को गीता का ज्ञान देते हैं तो उसमें अर्जुन की बुद्धिलब्धि में वृद्धि होती है जिससे उसमें संवेगात्मक स्थिरता आती है और उसकी संवेगात्मक लब्धि बढ जाती है, यह संवेगात्मक लब्धि उसे आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करती है और उसकी आध्यात्मिक लब्धि बढ जाती है। इस आध्यात्मिक लब्धि के कारण उसे आत्मानुभूति होती है और आत्मानुभूति होने पर वह युद्ध के लिये तैयार हो जाता है। मनोविज्ञान भी बुद्धिलब्धि, संवेगात्मक लब्धि तथा आध्यात्मिक लब्धि के संबंध के इसी क्रम को स्वीकार करता है। मनोविज्ञान के अनुसार भी ज्ञान से मनुष्य की बुद्धिलब्धि बढती है, बुद्धिलब्धि से उसके संवेगों में स्थिरता आती है और उसमें संवेगात्मक लब्धि बढ जाती है, इस संवेगात्मक लब्धि के कारण ही उसमें आध्यात्मिक लब्धि का विकास होता है और उसे आत्मानुभूति होती है आत्मानुभूति ही शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य है।

शैक्षिक निहितार्थ

श्रीमदभगवदगीता में श्रीकृष्ण एक शिक्षक के रूप में अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व है तथा अर्जुन एक सुपात्र विद्यार्थी के रूप में अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व है। श्रीकृष्ण में एक महान शैक्षिक प्रशासक एवं शिक्षण व्यूह रचनाविद् के समस्त गुण विद्यमान है। वर्तमान समय में शिक्षकों के लिये श्रीकृष्ण एक महान आदर्श है। श्रीकृष्ण ने एक गुरू (शिक्षक) की समस्त मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने शिष्य अर्जुन को उसके उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रेरित किया। इसी प्रकार वर्तमान समय में शिक्षक अपनी धार्मिक एवं सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने शिक्षक धर्म का निर्वहन कर सकता है।

गीता का ज्ञान न केवल शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिये वरन् शिक्षा मंत्रियों, शिक्षाविदों एवं व्यवस्थापकों के लिये भी लाभदायक है। भगवदगीता में शिक्षण कौशल, शिक्षण विधियों, शैक्षिक उद्देश्यों से लेकर मूल्यांकन तक के समस्त शैक्षिक तत्व निहित है। इस प्रकार श्रीमदभगवदगीता शिक्षा संबंधी तथ्यों से परिपूर्ण है जिसका अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में अपरिहार्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आत्रेय, डॉ, शांति प्रकाश : योग मनोविज्ञान, दी इन्टरनेशनल स्टैण्डर्ड पब्लिकेशन, वाराणसी
2. आचार्य रजनीश :गीता दर्शन, डायमण्ड बुक डिपो, दिल्ली 1980
3. आत्मानंद स्वामी :गीतातत्व चिंतन, भीलवाडा संस्कृति प्रकाशन, कलकत्ता 1984
4. आर्य मुनि जी : महाभारत आर्य टीका–प्रथम व द्वितीय भाग, हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरूकुल, झज्जर, 1995
5. ओड़, डॉ, एल के :शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008
6. भक्तिवेदान्त, ए.सी, स्वामी प्रभुपाद : श्रीमदभगवदगीता भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट मुम्बई 1990
7. भावे विनोबा : गीता प्रवचन सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 1995
8. भटनागर सुरेश : शक्षा मनोविज्ञान लायल बुक डिपो मेरठ 2008
9. चतुर्वेदी खेमचन्द्र : शाश्वत जीवन की व्याख्या गीता तुलसी मानस संस्थान जयपुर, 2006
10. दवे हरीन्द्र : ओशो गीता दर्शन भाग–1 विशाद का बंसत रेबल पब्लिशिंग हाउस गोरेगांव पुणे 1996

11- पाठक पी.डी. : शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2005

♦❐♦